I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

डॉ. रामकुमार वर्मा का हिन्दी प्रेम एवं सामाजिकता

डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर
प्रवक्ता, हिन्दी, श्री मलखानसिंह महाविद्यालय ठूलई, हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22090695

सारांश

राम कुमार वर्मा हिंदी साहित्य के बहुआयामी रचनाकार थे, जिन्होंने कविता, नाटक, एकांकी तथा आलोचना के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध किया। उनके साहित्य में हिंदी भाषा के प्रति गहरा अनुराग, भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था तथा सामाजिक जीवन के प्रति सजग दृष्टि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनका हिंदी-प्रेम केवल भाषा के प्रयोग तक सीमित नहीं था, बल्कि हिंदी के विकास, प्रचार-प्रसार और साहित्यिक प्रतिष्ठा से भी जुड़ा हुआ था। उनकी रचनाओं में सामाजिक विषमता, मानवीय संबंधों, नैतिक मूल्यों, पारिवारिक संवेदनाओं तथा व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंधों का प्रभावपूर्ण चित्रण मिलता है। वे साहित्य को समाज के प्रति उत्तरदायी मानते थे और उनकी रचनात्मक चेतना में मानवीय करुणा, सहानुभूति, सामाजिक समरसता तथा लोकमंगल की भावना प्रमुख है। प्रस्तुत अध्ययन में राम कुमार वर्मा के हिंदी-प्रेम के विविध आयामों तथा उनकी सामाजिक चेतना का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि उनकी साहित्यिक दृष्टि भाषा, संस्कृति और समाज को एक-दूसरे से जोड़कर देखती है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 11-03-2026
- **Accepted:** 25-04-2026
- **Published:** 30-04-2026
- **IJCRM:**5(2); 2026: 1119-1121
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सेंगर. क. सिं, डॉ. रामकुमार वर्मा का हिन्दी प्रेम एवं सामाजिकता. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2):1119-1121.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: राम कुमार वर्मा, हिंदी-प्रेम, हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य, सामाजिकता, सामाजिक चेतना, भारतीय संस्कृति, मानवीय संवेदना, सामाजिक समरसता, लोकमंगल, नैतिक मूल्य, सामाजिक उत्तरदायित्व, भाषा-संवर्धन, राष्ट्रभाषा, साहित्य और समाज।

© 2026 डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी युग के श्रेष्ठ साहित्यकारों में डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम महत्वपूर्ण है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी वर्मा जी ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में सृज किया। परिणामस्वरूप साहित्य के सृजन और अनुशीलन दोनों ही क्षेत्रों में उनके कृतित्व का प्रकाशन कार्य हुआ। द्विवेदी युग में ही वर्मा जी का लेखन कार्य प्रारम्भ हो चुका था। लेकिन उसका प्रौढ़ विकास छायावादोत्तर युग में हुआ। वर्मा जी ने काव्य कहानी, एंकाकी, अलोचना, नाटक, इतिहास, साहित्य के क्षेत्र में अपनी लेखनी द्वारा विभिन्न साहित्यक विधाओं में सृजन कर अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को स्थापित किया। डॉ. वर्मा छायावाद के पाँचवें स्तम्भ के रूप् में भी आसीन हुए। साहित्यिक योगदान की दृष्टि में रखते हुए डॉ. रामकुमार वर्मा का बहुमुखी व्यक्तित्व और कृतित्व लम्बे समय तक स्मरणीय है।

डॉ. वर्मा समय के बहुत पाबन्द थे, प्रत्येक कार्य को समय से सम्पादित करना उनके स्वभाव में चार चाँद लगाता था। निष्ठा, लगन, परिश्रम द्वारा उनका अधिकांश समय चिन्तन, मनन, स्वाध्याय, लेखन एवं अध्यापन में व्यतीत होता था।गंभीर चिन्तन, मनन, अध्ययन, लेखन के बाद भी उनका व्यक्तित्व सहज भावुक और कोमलता आदि गुणों से पूर्ण था। व्यक्तित्व में मौलिक चिन्तन, हाजिर जवाबी, विनोद प्रियता और सहजता के साथ-2 उनकी मौज मस्ती एवं अल्हड़ता का विशेष गुण विद्यमान था। अपने आचरण सिद्धान्तों पर अडिग रहने वाले स्वाभिमानी एवं दृढ़ संकल्पित व्यक्तित्व ने उन्हें प्रगति की नई बुलन्दियों पर आसीन किया। उनके व्यक्तित्व में दृष्टजनों के साथ सद्व्यवहार, शालीनता, भावुकता, सात्विकता, पवित्रता और कलात्मकता आदि सद्गुणों का असीम समावेश था। यही कारण है कि हिन्दी काव्य की सेवा में अपनी निष्ठा, संकल्प परिश्रम तथा निस्वार्थ सेवा भाव द्वारा छायावादोत्तर युग की प्रेरणात्मक एवं रचनात्मक शक्ति बने।

आधुनिक युग में डॉ. वर्मा का नाम उन सहित्यकारों में लिया जाता है जिन्होनें हिन्दी साहित्य की निस्वार्थ सेवाकर उसे प्रगति की दिशा दी एवं समृद्ध और उन्नत बनाया। हिन्दी के संस्कार डॉ. वर्मा को विरासत के रूप् में अपने ही परिवार से प्राप्त हुए। डॉ. वर्मा ने हिन्दी साहित्य सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया। हिन्दी सेवा का दृढ़ व्रत धारण करने के बाद उनका यह सौभाग्य रहा कि इस पवित्र उद्देश्य में उन्हें पूर्ण सफलता मिली। वर्मा जी ने साहित्य सेवा के साथ-2 विभिन्न माध्यमों में हिन्दी की प्रचुर सेवा की। अपने विद्यार्थी जीवन में ही अन्य साहित्यकारों के साथ मिलकर एक हिन्दी संस्था का निर्माण किया गया और इसका नाम रखा गया 'सुकवि समाज'। काफी समय तक इस संस्था के मंत्री पद पर आसीन रहते हुए कवि गोष्ठी आदि कराते रहे। इस संस्था के तत्वाधान में सरोजनी नायडू, मैथलीशरण गुप्त, महोदवी वर्मा, भगवती चरण वर्मा, महादेवी वर्मा, नरेन्द्र शर्मा आदि कविगण अपनी रचनाओं का पाठ करते। डॉ. वर्मा जी ने पा्रध्यापक बन जाने के पश्चात भी अपनी सेवा और निष्ठा को जरा भी शिथिल नहीं होने दिया। अध्यापकीय जीवन में एक नवीन संस्था 'भारतीय हिन्दी परिषद' की स्थापना कर हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के कार्य को सक्रिय रूप से निभाया।

डॉ. वर्मा जी ने प्रयाग विश्वविद्यालय में एक नवीन संस्था 'नाट्य समिति' का गठन किया। यह प्रयास डॉ. वर्मा जी के अब तक किये गये प्रयासों में सबसे महित्वपूर्ण था। इस समिति के माध्यम से हिन्दी नाटकों के लिए रंगमंच की स्थापना की। नाटक विद्या की स्थापना, खेलने के लिए स्थान, नाटक और पात्र भी जुटाए गये और इस प्रकार हिन्दी की सर्वाधिक शसक्त विद्या को पुनः जीवित किया गया। हिन्दी नाटक लिखने की स्वस्थ्य परंपरा डाली। डॉ. वर्मा जी ने इस दिशा में गंभीर कार्य करने हेतु एक नवीन संस्था का जन्म दिया। 'भारत नाट्य संस्थान' के द्वारा वर्मा जी के एकांकी नाटक 'औरंगजेब की आखिरी रात' का मंचन हुआ, जिसकी साहित्य जगत में भूरि-2 प्रशंसा हुई। 'भारत नाट्य संस्थान' ने हिन्दी नाटक के प्रचार व प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। नाटकों के पति युवा रचनाकारों में आकर्षण पैदा हुआ वहीं दूसरी ओर दर्शकों की अभिनय कला के प्रति जिज्ञासा बढ़ी। अब डॉ. वर्मा को यह पक्का विश्वास हो गया कि अभिनय और रंगमंच द्वारा हिंदी को प्रभावी बनाया जा सकता है और उसको व्यापाक रूप में प्रचारित भी किया जा सकता है। डॉ. वर्मा ने विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी विभाग में 'कला संगम' की ओर से निरंतर चित्रकला प्रदर्शनी काव्य प्रतियोगिता, नाटक मंचन आदि का कार्यक्रम आोजित होता। कला संगम का एक उद्देश्य कला के प्रति जाग्रत करना था तो दूसरी ओर नवोदित रचनाकारों रंगधर्मियों को पैदा करना भी था।

हिन्दी प्रचारक के रूप् में डॉ. रामकुमार वर्मा का मूल्यांकन किया जाये तो विदित हो जायेगा कि वे कितने बड़े रचनाकर्मी साहित्य साधक और सामाजिक व्यक्ति थे। अध्यापन कार्य के अतिरिक्त संस्थाओं के गठन, रख-रखाव, प्रचार व प्रसार कार्य, अभिनय तथा मंचन आदि समस्त कार्यो को संपादित करने के बाद नित नूतन संस्थाओं के जन्म में सम्मिलित होते और अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन कर उत्तरदायी पद ग्रहण कर लेते थे। नागरी प्रचारणी सभा काशी के डॉ. वर्मा आजीवन सदस्य बनें, इसके अतिरिक्त वर्मा जी ने सर्वाधिक हिंदी सेवा हिंदी साहित्य सम्मलेन प्रयाग के महामंत्री और परीक्षा मंत्री पद पर रहकर की। वर्मा जी ने परीक्षा मंत्री के रूप में व्यवस्था स्थापित की कि परीक्षार्थियों के ज्ञान बर्द्धन हेतु अनेक योजनाऐं बनायी। महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशन, अप्राप्य साहित्य को प्रकाशित कर समाज के सम्मुख लाकर डॉ. वर्मा जी हिंदी की बहुआयामी सेवा प्रदान की। इसके अतिरिक्त वर्मा जी देश-विदेश की कई हिन्दी संस्थाओं और भारतीय विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयांे के परिसरों में मुख्य अतिथि के रूप में हिंदी के प्रचार प्रसाद का निस्वार्थ कार्य सम्पादन करते रहे। डॉ. वर्मा जी के कई नाटक एवं एकांकी देश भर में कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जाते हैं।

वर्मा जी ने साहित्यक रूप में हिंदी की जो सेवा प्रदान की है वह स्मरणीय है। इसका प्रमाण हिंदी का वमृद्ध साहित्य और उसकी परंपरा है। एक प्रोफेसर के रूप् में उन्होनें रूस में हिंदी पाठन हेतु पाठ्यक्रम तैयार किया। डॉ. वर्मा जी ने अन्य देशों के दौरे में भी वे हिंदी का प्रचार प्रसार करते रहे। उनकी अनेक कृतियाँ पुरस्कृत हुई। भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त 'पदम् भूषण' पुरस्कार उनके सम्मान का सर्वाधिक सौभाग्यशाली दिन कहा जा सकता है।

डॉ. वर्मा जी अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान बनाने में सफल रहे हैं। काव्य नाटक, एकांकी, आलोचना, ग्रद्यगीत, निबन्ध, इतिहास आदि सभी क्षेत्रों में अपनी यशो पताका फहयी। उनकी काव्य कृतियों में चित्तौड़ की चिता, निशीथ, एकलव्य, अंजली, चित्ररेखा, चन्द्रकिरण, आकाश गंगा, कृतिका, ये गजरे तारों वाले, उत्तरायण, अहिल्या आदि सर्वोधिक चर्चित हैं। वहीं वर्मा जी एकांकी नाटकों के जन्मदाता कहे जाते हैं। एकांकी नाटकों की रचना में अनुपम प्रयोग अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। एकांकी नाटक रचनाओं के साथ-2 डॉ. वर्मा जी ने हिन्दी रंगमंच को काफी सबल और उन्नत बनाया। उनके चर्चित एकांकियों में पृथ्वीराज की आँखें,

© 2026 डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

चारूमित्रा, शिवाजी, सप्तकिरण कौमुदी महोत्सव, दीपदान, ऋतुराज, धुरवतारिका रम्यरास, रजतरश्मिम आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसी कुछ महत्वपूर्ण घटनाऐं घटित होती हैं जिनके कारण उनकी जीवन धारा ही बदल जाती है। घटनाऐं मनुष्य को प्रेरणा एवं प्रकाश देती है। डॉ. वर्मा जी के जीवन में कुछ ऐसी घटनाऐं हुई जिनके कारण वे राष्ट्रभक्त, कवि एवं लेखक, राष्ट्रभक्त स्वतन्त्रता सेनानी और प्राध्यापक तथा हिन्दी के साहित्यकार बने। वर्मा जी के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना यह है कि उन्होनें सोलह वर्ष की अवस्था में अखिल भारतीय कविता प्रतियोगिता में 'बेनी माधव खन्ना काव्य पुरस्कार' प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता की विजय ने उनके कविरूप को जाग्रत कर दिया, तत्पश्चात वे निरन्तर काव्य रचना की ओर उन्मूख हुए और कालान्तर में छायावाद के पाँचवें कवि स्तम्भ कहलाए। यद्यपि उनको नाटकाकार के रूप में सर्वाधिक ख्याति प्राप्त हुई। परन्तु वो निःसन्देह उच्चकोटि के कवि हैं।

वर्मा जी की लेखनी जो काव्य साहित्य के साथ चली वो अनवरत चलती रही। मेधावी रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित होते गये। तत्कालीन युग की हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर साहित्य सृजन की ख्याति चहुॅ दिशाओं में फैली। साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक उनसे आग्रह कर रचनाऐं लिखवाने लगे।

निष्कर्ष

इस प्रकार वर्मा जी काव्य नाटक, एकांकी सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाकर हिन्दी साहित्य के भण्डार को वमृद्ध बनाया और हिन्दी के सच्चे साधक के रूप में साधना की। वर्मा जी ने हिन्दी सेवा कर साहित्य जगत में कीर्तिमान स्थापित किया।

संदर्भ ग्रंथ

1. वर्मा रामकुमार. रामकुमार वर्मा ग्रंथावली. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी.
2. वर्मा रामकुमार. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: साहित्य भवन.
3. वर्मा रामकुमार. कबीर का रहस्यवाद. प्रयागराज: हिंदी साहित्य सम्मेलन.
4. वर्मा रामकुमार. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास एवं अन्य निबंध. प्रयागराज: साहित्य भवन.
5. शुक्ल रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.
6. द्विवेदी हजारी प्रसाद. हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
7. सिंह नामवर. छायावाद. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
8. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
9. वाजपेयी नंददुलारे. हिंदी साहित्य: बीसवीं शताब्दी. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
10. सिंह बच्चन. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.
11. शर्मा रामविलास. हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
12. शुक्ल रामचंद्र. चिंतामणि. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.
13. शोध-पत्र के लिए उपयोगी प्राथमिक स्रोत: रामकुमार वर्मा की कविताएँ, नाटक, एकांकियाँ, निबंध तथा आलोचनात्मक रचनाएँ—विशेष रूप से वे रचनाएँ जिनमें हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति, सामाजिक जीवन, मानवीय संबंध और राष्ट्रीय चेतना से संबंधित विचार व्यक्त हुए हैं.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर हिंदी विषय के प्रवक्ता हैं और श्री मलखानसिंह महाविद्यालय, ठूलई (हाथरस) में अध्यापन कार्य से जुड़े हैं। उनकी अकादमिक रुचि हिंदी भाषा एवं साहित्य, साहित्यिक आलोचना तथा भारतीय साहित्यिक परंपरा के अध्ययन में है। वे विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास और हिंदी साहित्य के व्यापक अध्ययन के लिए समर्पित हैं।

© 2026 डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/